 ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

निराला और प्रगतिवाद

डॉ. आर.पी. वर्मा
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

प्रकृति मानव–जाति और जीवन के उदयकाल से ही मानव की सहचरी एवं प्रेरणा का प्रमुख श्रोत रही है। मानव को दर्शन, अध्यात्म तथा अन्यान्य व्यवहार क्षेत्रों में स्थूल–सूक्ष्म जो कुछ भी मिला, स्फुरित हुआ या अनुभूत हुआ, इस सब स्पन्दनों का आधार प्रकृति ही है इसी प्रकृति ने द्विवेदी युग के इतिवृत्तात्मक आयामों की प्रतिक्रिया स्वरूप काव्य के क्षेत्रों में जो नव्य भाव और शिल्पगत अनुभूतियां प्रदान कीं, वे छायापाद के नाम से अभिहित की जाती है।

हिन्दी–साहित्य में छायावाद का उदय जिन सन्दर्भों, आयामों और परिस्थितियों में हुआ हिन्दी–आलोचक एक विचित्र स्थिति में पड़–गए, इसलिए आरम्भ में इसवाद का बड़ा उपहास किया गया और इसका ठीक–ठीक रूप समझने के स्थान पर इसे और भी अधिक उलझा दिया गया। पर बाद में जैसे–जैसे इस काव्य धारा का परिपादर्व, इसमें अन्तर्हिंग सौन्दर्य, माधुर्य का बोध सहृदसों को होता गया, छायावाद को हिन्दी का एक प्रमुखतम वाद स्वीकार कर लिया गया। अब तक बहुत सीमा तक इसका सही मूल्यांकन भी हो गया है। छायावाद के सम्बन्धित विभिन्न बालोचकों ने जो भिन्न–भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं, उनसे निष्कषित छायावाद के निम्नलिखित रूप माने जाते हैं –

1. वैयक्तिकता अर्थात् समाज–चित्रण की अपेक्षा अपनी ही व्यक्तिगत भावनाओं का प्रमुख रूप से चित्रण।
2. प्रेम का चित्रण।
3. प्रकृति पर चेजना का आरोप और उसका मानवी कारण।
4. रहस्य–भावना की अभिव्यक्ति और दार्शनिक साधना।
5. सूक्ष्म अप्रस्तुत विधान द्वारा सूक्ष्म और स्कूल का रूपायन।

इन तत्त्वों के अतिरिक्त छायावाद का एक और भी तत्त्व है, जिसकी और प्रायः कम ही ध्यान दिया गया है। वह है छायावादी कवि की सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना। निराला छायावादी कवियों में प्रमुख और छायावाद के चार स्तम्भों में से एक हैं, अतः इनके काव्य में छायावादी काव्य चेतना की सभी विशेषताएं उपलब्ध होती हैं, जिनका विवरण संक्षिप्त रूप से निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

छायाप्रति का पहला तत्व है वैयक्तिकता : अर्थात् समाज चित्रण की अपेक्षा अपने ही हर्ष विषाद को प्रधानता देना। दूसरे शब्दों में व्यक्ति चेतना के माध्यम से समष्टि चेजना का रूपायन छायावादी काव्य का प्रमुख तत्त्व है। प्रसाद ने 'आंसू' में अपने ही मिलये आंसू बहाये हैं, पन्त ने 'ग्रन्थि' में अपनी ही ग्रंथि खोली है औश्र महादेवी ने अपनी ही वेदा के संसार को रंग–बिरंगा बनाया है। फिर भी इन सब अभिव्यक्तियों को नितान्त वैयक्तिक अभिव्यक्तियां नहीं स्वीकार किया जा सका। निराला के काव्य में भी भावनाओं की अभिव्यक्ति का आधिक्य है, पर कोई नहीं कर सकता कि उनका संसार मात्र कवि के अपने जीवन तक ही सीमित है। वहां उनके स्वी

भी अन्तहित है : इस अभिव्यक्ति की दो नीतियों से व्यक्त किया गया है – प्रत्यक्ष विधि और परोक्ष विधि। प्रत्यक्ष विधि का यह उदाहरण प्रस्तुत है –

'गूंथे तप्त अश्रुओं के मैंने कितने ही हार

बैठी हुई पुरातन स्मृति की मलिन गोद पर

प्रियतम !

रुद्ध द्वार पर रखे थे मैंने कितने ही बार

अपने वे उपहार कृपा के लिए तुम्हारी अनुपम !

मेरे दग्ध हृदय का अतिशय ताप

प्रभाकर की उन स्वर किरणों में,

नूपुर सी मैं बजी तुम्हारे लिए

तुम्हारी अनुरागतियों के निष्ठुर चरणों में।'

इन पंक्तियों में कवि ने अपनी 'विमल वासना' का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन किया है और –

'धिक जीवन जो पाता ही आया है विरोध,

धिक साधन जिनके लिए सदा ही किया शेष।'

इन पंक्तियों में राम के शब्दों में माध्यम से – परोक्ष विधि से अपने ही संघर्षपूर्ण जीवन की भर्त्यना कवि ने कही है। अतः कहा जा सकता है कि निराला के काव्य में वैयक्तिकता का तत्त्व प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होता है। साथ ही यह भी विवेचन है कि जो बात कवि के अपने व्यक्ति के लिए सत्य है, वह युग के उस जैसे अभ्य व्यक्तित्वों के लिए भी सत्य रही है। अतः व्यष्टि में समष्टि निहित है, ऐसा स्वीकारा जा सकता है।

प्रेम का चित्रण छायावाद का दूसरा तत्व है। छायावादी काव्य में दो प्रकार है प्रेम चित्रण हुआ है – लौकिक और अलौकिक। लौकिक प्रेम के चित्रण में छायावादी कवियों ने अपने ही प्रेम की – संयोग और वियोगजन्य सुःख–दुःख की अभिव्यक्ति की है। निराला के काव्य में लौकिक प्रेम के वर्णन का ज्ञान सर्वाशतः स्वीकार नहीं की जा सकती। उनके काव्य में लौकिक प्रेम की अपेक्षा अलौकिक प्रेम चित्रण है। उनकी प्रेमाभि व्यक्ति का माध्यम विशेषतः प्रकृति ही रही है यथा –

मूर्ति वह यौवन की बढ़ बढ़ –

एक अश्रुत भाषा की तान,

उमड़ चली फिर फिर श्रड़ अढ़

स्वप्न सी जड़ नयनों में पान,

मुक्त कुन्तल, मूल व्याकुल लोल

प्रणत पीड़ित वे अस्फुट बोल।

x x x x x x

'विजन–बन–बल्लरी पर

सोती थी सुहाग भरी –

स्नेह स्वरूप मग्न – अचल कोमल

तनु–तरुणी

जुही की कली,

दृग बन्द किसे, शिथिल, प.ांक में।'

इस दूसरे पद्य में प्रेम के उद्दाम रूप का चित्रण तो है ही सही। प्रकृति का स्वाभाविक चित्र भी हुआ है। यहाँ प्रेम का अध्यात्म परक दार्शनिक रूप भी देखा जा सकता है।

छायावादी कवियों ने प्रकृति को चेतन सत्ता माना है और उसका मानवीकरण करके उसी के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति की है। प्रकृति का इन्होंने कई रूपों में अपनाया है। यथा – यथातथ्य प्रकृति–चित्रण, उद्दीपन रूप में प्रकृति–चित्रण, पृष्ठभूमि के रूप में मानव–भावनाओं से प्रभावित प्रकृति का मानवीकरण, अलंकार रूप प्रकृति–चित्रण आदि।

इन सब रूपों का कारण प्रकृति पर चेतना का आरोप है। निराशा काव्य में भी प्रकृति के ये रूप प्रचुरता से मिलते हैं। उदाहरणार्थ, 'यमुना के प्रति' कविता में कवि यमुना को सम्बोधित करके पूछता है –

बता कहां अब वह बंशवट?
कहां गये नटनागर श्याम ?
चल चरणों का व्याकुल पनघट
कहां आज वह बृन्दा धाम ?
कभी यहां देखे थे जिनके
श्यम बिरह से तप्त शरीर,
किस विनोद की तृषित गोद में
आज पोंछती वे दृग नीर?

इस प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

रहस्य भावना की अभिव्यक्ति प्रत्येक छायावादी कवि रहस्यवादी है, किन्तु इनका रहस्यवाद सन्त कवियों के रहस्यवाद से अधिकांशतः भिन्न है, अतः इसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा अन्यविद्वान विवेचकों के द्वारा नवीन रहस्यवाद अथवा भावात्मक रहस्यवाद का नाम दिया गया है। छायावादी कवि अपनी रहस्य–भावना को प्रायः जिज्ञासा तथा कौतूहल के साथ प्रकट करता है –

'लहरों पर लहरों काा चंचल नाच
याद नहीं थी करनी उसकी जांच,
अगर पूछता कोई तो वह कहती
उसी तरह हंसती पागल सी बहती–
तब जीवन की प्रबल उमंग,
जा रही मैं मिलने के लिए था ? कर सीमा,
प्रियतम असीम के पास।'

निराला के काव्य के समग्र अध्ययन से यह बात भली–भांति उजागर हो जाती है कि छायावादी कवियों में से रहस्यवादी काव्य–चेतनाओं का सामांजस्यपूर्ण एवं समग्र रूपायन केवल बड़ी कर पाये हैं।

छायावादी कवियों ने अपनी सूक्ष्म भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए सूक्ष्म प्रतीकों का प्रयोग किया है। निराला–काव्य में भी सूक्ष्म अप्रस्तुत विधान और साक्षणिकता के प्रचुर प्रयोग मिलते हैं यथा –

'हुआ रूप दर्शन
अब कृतविद्य तुम मिले
विद्या को दृगों से,
मिला लावण्य क्यों मूर्ति को मोहकर,
शेफालिका को शुभ्र हीरक–सुमन–हार,
श्रृंगार
शुचि दृष्टि मूक रस–सृष्टि को।'

छायावाद के कवियों के काव्य पर प्रबलतम आक्षेप यह है कि वह पलायनवादी है, अर्थात्, उसमें जीवन का कोई सूत्र नहीं। छायावादी कवि इस विश्व के संघर्षण से पलायन करके अपनी कल्पना के स्वर्णिम लोक में रहने का आदी है जहां कोलाहल की अवधि नहीं, वरन् सागर लहरी अम्बर के कानों में निश्छल प्रेम कथा कहती रहती है। यह आक्षेप प्रबलतम होते हुए भी सही नहीं है, क्योंकि प्रत्येक छायावादी कवि के काव्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतनता मिलती है। छायावाद के प्रवर्तक प्रसाद की तो इस विषय में यहां तक धारणा थी कि जब तक समाज के उपकार के लिये कवि की लेखनी ने कार्य न किया हो; तब तक केवल उपमा और शब्द वैचित्र्य नया अलंकारों पर भूलकर हम उसे एक ऐसे कवि के आसन पर वहीं बिठा सकते जिसने अपनी लेखनी से समाज की प्रत्येक कृतियों को स्पन्वित करके उनमें जीवन डालने का उद्योग किया है।'

निराला की सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना भी प्रसाद और पन्त की चेतना से कम नहीं बल्कि उनसे कहीं अधिक है। वे भी चाहते हैं कि देश के हर व्यक्ति में धर्म काठिन्य और कर्मण्यता हो। उसमें उन नवीन शक्तियों का आविर्भाव हो, जिससे वह अपने कर्तव्य, का सही रूप में पालन कर सके, अपने व्यक्तित्व के साथ ही समाज और राष्ट्र के स्तर को भी उठा सके। इसलिए वे वीणावादिनी से यह प्रार्थना करती है –

'वर दे वीणा वादिनी वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र–रण, अमृत नवभारत में भर दे।
काट अन्य उर के बन्धन–स्वर
वहां ज्योतिर्मय निर्झर
कलषु–भेद–तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।'

निराला जी का 'जागो फिर एक बार' जैसी अनेक कविताएं' उपलब्ध हैं कि जिनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता का अमित–अमिट भाव उजागर है। मानव–समाज के दुःख–द्वंदों को निहार अनेक कविताओं में कवि का हृदय विगलित होकर बह उठा है। मानवता के स्वर स्पन्दन और अभिनन्दन भी वहां स्पष्ट सुने जा सकते हैं।

इस प्रकार की निराला की यह सामाजिक अथवा राष्ट्रीय चेतना निःसंदेह ही उच्चकोटि की वस्तु है। निराला किसी समिति परिधि में रहने वाले प्राणी नहीं हैं, इसलिए वे न तो सामाजिक बन्धनों को ही स्वीकार करते हैं और न भावों की किसी लघु सीमा में बांधकर रखना चाहते थे। यही कारण है कि उसकी सामाजिक चेतना किसी देश विदेश या समाज विशेष तक ही सीमित नहीं रहती है। वे तो समूचे विश्व के लिए ही मंगल प्रार्थना करते हैं –

'जग को ज्योतिर्मय कर दो।
प्रिय कोमल पद गामिनी ! मन्द उत्तर
जीवनमृत तरु–तृण मूल्यों की पृथ्वी पर
हंस हंस निज पथ आलोकित कर
नूतन जीवन भर!

अनेक कविताओं में वे अपना सर्वस्व बलिदान करके मानवता को मुक्त करने का प्रण भी करते हैं वास्तव में ऐसा निरालाा तो कर सकते थे।

छायावादी कवियों ने उन मूल कारणों को खोजने का प्रयत्न किया है जिसके कारण समाज में अव्यवस्था है, दुःख दरिद्रता है, विषमता है और गतिहीनता है। धर्माडम्बर समाज का भयंकर अभिशाप है और जब तक वह दूर नहीं हो जाता, समाज की गति में नव जीवन नहीं आ सकता। निराला धर्माडम्बरता पर व्यंग करते हुए लिखते हैं –

'मेरे पड़ोस के वे सज्जन, करते प्रतिदिन सरिता–मज्जन,
झोली से पुए निकाल लिए, बढ़ते कवियों के हाथ दिए।
देखा भी नहीं उधर फिर कर, जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया दूर रहा मानव, बोला वह धन्य श्रेष्ठ मानव।'

मानवता की तुलना में धर्माडम्बरों के प्रति इससे बढ़ कर और क्या व्यंग हो सकता है। छायावादी पर्यावरण में निराला ने इस प्रकार के व्यंगों की झड़ी लगाई है।

छायावादी कवि का बराबर यह प्रयत्न रहा है कि वह समूचे विश्व में नवीन शक्ति का मंत्र फूंक दे, यही कारण है कि छायावादी काव्य में अनेक अमर उद्बोधन गीत मिलते हैं। महादेवी स्वयं को दीपक की भांति इसीलिए जला देना चाहती है, ताकि दूसरों को प्रकाश मिले, विहग भी अंधेरे में अपना मार्ग न खो बैठे। प्रसाद विभावरी

के बोलने पर सबको जग जाने का उद्घोष करते हैं। इसी प्रकार निराला भी जागरण के स्वरों में कहते हैं –

"जागो फिर एक बार !

x x x x

किसने सुनाया यह और मन मोहन अति।

दुर्लभ सग्राम – राग

फाग का खेला रण बाग्ह महीनों में

शेर की मांद में आया है आज स्यार

जागो फिर एक बार।"

अतः कह सकते हैं कि छायावाद में सामाजिक अथवा राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति पर्याप्त मात्रा में और उचित ढंग से हुई है। निराला के काव्य में भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना से संयत अनेक मुंह बोलते चित्र मिलते हैं। छायावादी पर्यावरण में मानवीय संवेदनाओं को उन्होंने बड़ी सफलता के साथ ढाला है। वहां समग्र मानवीय – चेतना के काफी चित्रण उपलब्ध है।

निराला जैसे क्रांतिकारी कवि से यह आशा करना अनुचित नहीं कि वह जिस क्षेत्र में उतरेगा, उसी में कुछ–न–कुछ अपनी मौलिक प्रतिभा से न देगा। छायावाद के विषय में भी यही बात है। इन्होंने छायावादी भाषा को नूतन सामाजिक शब्दावली देकर उसके भण्डार को समृद्ध बनाया, उसे गूढ़ से गूढ भावों की अभिव्यंजना करने की शक्ति प्रदान की। उसे ताल–लय से संयत, छन्दों के बन्धनों से मुक्त नाद–सौन्दर्य प्रदान किया। अप्रस्तुत–विधान की परम्परा से बन्धनों से मुक्त कर के नवीन ढंग से अलंकारों की योजना की ओर भारतीय अलंकारों के अतिरिक्त अंग्रेजी के मानवीकरण (Personification), विशेषण–विपर्यय (Transferred Episat), ध्वन्यर्थ व्यंजना (Oro-matopocla) आदि अलंकारों का प्रयोग करके अलंकार–प्रयोग के क्षेत्र को विस्तार दियां मुक्त छन्द के तो ये जन्मदाता ही माने जाते हैं। इन्होंने कविता को छन्दों के बंधन से निकालकर उसे नवीन गति और संगीतात्मकता दी। विचार क्षेत्र में भी इन्होंने वास्तविक दर्शन का समावेश करके छायावादी काव्य के दार्शनिक क्षेत्र का विस्तार किया, यद्यपि कहीं–कहीं इनका दर्शन प्रेम काव्य की सरलता एवं सुबोधता में बाधक बन गया है। अतः कहा जा सकता है कि निराला ने छायावाद को नवीन दिशा और नवीन शक्ति देकर प्राणवान बनाया है।

निराला जी ने छायावाद को क्या दिया, इस प्रश्न पर विचार करते समय कुछ अन्य बातें भी सामने आती हैं। उनमें से प्रमुख यह है कि निराला जी का अटूट प्रतिभा के कारण छायावादी काव्य परम्परागत काव्य–रूढ़ियों के चंगुल से भी मुक्त हो सका। निराला जी ने छायावादी पर्यावरण में मानवीय मुख–दुःखों और करूणा–स्नान अनुभूतियों का जैसा सजल–सजीव वर्णन किया है। अन्य कोई भी कचि निश्चय ही नहीं कर सका, छायावादी काव्य की कोमल कान्त मानी जाने वाला भाषा को जो भास्वरता महाप्राण निराला ने प्रदान की, वह निश्चय ही अविस्मरणीय है। इसी प्रकार छन्द के बंधनों, तुकों आदि से कविता को मुक्ति दिलाकर भी उसे ताल–लय एवं गेयता के जो तटबन्ध निराला ने प्रदान किये, वह एक अविस्मरणीय घटना है। ध्वन्यारमकता,चित्रमयता, नाद–सौन्दर्य एवं रणात्मकता की देनों को भी नहीं भुलाया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि वह निराला का ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व था कि जिसने छायावादी काव्य और कवियों पर पलायन वादी होने के दोष का परिहार किया। इस प्रकार निराला को छायावादी व्यक्तित्व अपना सर्वांगीण एवं विशिष्ट महत्व रखता है।

संदर्भ

1. महाप्राण निराला – गंगा प्रसाद पाण्डेय, पृ. 61
2. छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन – कृष्ण विमल, पृ. 31
3. निराला और पन्त काव्य के आध्यात्मिक प्रेरणा–श्रोत–चन्दा देवी, पृ. 41
4. निरालाः आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 52
5. निरालाः कृति से साक्षात्कार–नंदकिशोर नवल, पृ. 42
6. निराला काव्य की छवियां – नंदकिशोर नवल, पृ. 58
7. निराला और मुक्ति बोधः चार लम्बी कविताएं–नंदकिशोर नवल, पृ. 68
8. कवि निराला–नंद दुलारे बाजपेई, पृ. 91
9. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह, पृ. 21
10. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, पृ. 48
11. हिंदी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 58
12. प्रगतिवादी हिंदी साहित्य का इतिहास – कर्ण सिंह चौहान, पृ. 97

Copyright © 2016 Dr. R.P Verma. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.